United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

दलित साहित्य और मानव मूल्य

डॉ. गौतम कांबले
व्याख्याता एवं अनुवादक

हिंदी साहित्य की विकास-यात्रा में दलित साहित्य का उदय केवल एक नवीन साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के एक निर्णायक मोड़ के रूप में देखा जाना चाहिए। यह साहित्य उस समाज-वर्ग की अनुभूतियों, संघर्षों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है जिसे सदियों तक सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया। दलित साहित्य का मूल उद्देश्य केवल पीड़ा का विवरण प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उन मानव मूल्यों की पुनर्स्थापना करना है जिन्हें जाति-व्यवस्था और सामाजिक असमानता ने लगातार नकारा।

मानव मूल्य—जैसे समानता, स्वतंत्रता, गरिमा, न्याय, करुणा और बंधुत्व—दलित साहित्य की आत्मा हैं। यह साहित्य साहित्यिक सौंदर्य से अधिक नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व देता है। इस दृष्टि से दलित साहित्य केवल साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक मानवीय और नैतिक आंदोलन है, जो मनुष्य को उसकी मनुष्यता लौटाने का प्रयास करता है।

दलित साहित्य की अवधारणा और अर्थ

'दलित' शब्द का सामान्य अर्थ केवल सामाजिक रूप से पिछड़ा या शोषित वर्ग नहीं है, बल्कि वहमनुष्यहै
जिसे व्यवस्था ने जानबूझकर हाशिये पर रखा, अपमानित किया और उसकी मानवीय पहचान को नकारा। दलित साहित्य इसी अपमानित मनुष्य की आवाज है, जो मौन से विद्रोह तक की यात्रा को अभिव्यक्त करता है।

दलित साहित्य सहानुभूति का साहित्य नहीं है, बल्कि अनुभूति का साहित्य है। यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। सहानुभूति बाहरी दृष्टि से आती है, जबकि अनुभूति जीवन के भीतर से जन्म लेती है। दलित साहित्य में लेखक स्वयं उस यथार्थ का भोगा हुआ साक्षी होता है, इसलिए उसकी अभिव्यक्ति में सत्य की निर्भीकता और संवेदना की प्रामाणिकता होती है। शरणकुमार लिंबाले के अनुसार, दलित साहित्य वही है जो दलितों द्वारा, दलित जीवन के अनुभवों से लिखा गया हो। यह परिभाषा दलित साहित्य की आत्मा को स्पष्ट करती है।

मानव मूल्य : एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

मानव मूल्य वे नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड हैं जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखते हैं। इनमें प्रमुख रूप से समानता, स्वतंत्रता, गरिमा, सामाजिक न्याय, करुणा और सह-अस्तित्व शामिल हैं। परंपरागत साहित्य में इन मूल्यों की चर्चा अक्सर आदर्शवादी और सैद्धांतिक रही है, जबकि दलित साहित्य में ये मूल्य जीवन-संघर्ष के माध्यम से अर्जित किए गए

यथार्थ के रूप में सामने आते हैं। यहाँ मानव मूल्य किसी उपदेश का विषय नहीं, बल्कि अस्तित्व की शर्त हैं।

दलित साहित्य और समानता का मूल्य

समानता दलित साहित्य का केंद्रीय मानव मूल्य है। भारतीय समाज की वर्ण-व्यवस्था ने जन्म के आधार पर मनुष्य को ऊँच और नीच में विभाजित किया। दलित साहित्य इस अमानवीय विभाजन को न केवल उजागर करता है, बल्कि उसका प्रतिरोध भी करता है। डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार दलित साहित्य की वैचारिक आधारशिला हैं। उनका यह कथन कि मनुष्य की महानता उसके जन्म से नहीं, उसके कर्म से निर्धारित होती है— दलित साहित्य की प्रत्येक विधा में प्रतिध्वनित होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में शिक्षा, समाज और पारिवारिक जीवन में व्याप्त असमानता का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह कृति समानता के अभाव की त्रासदी को उजागर करती है और यह स्पष्ट करती है कि समानता दया नहीं, बल्कि अधिकार है।

स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की चेतना

दलित साहित्य में स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता है। सदियों तक दलितों को सोचने, बोलने और अपने सपने देखने की स्वतंत्रता से भी वंचित रखा गया। दलित लेखन में आत्मसम्मान का स्वर अत्यंत मुखर है। दया पवार की 'बलूता' और कंवल भारती की रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि बिना आत्मसम्मान के जीवन केवल जैविक अस्तित्व है, सार्थक जीवन नहीं। दलित साहित्य मनुष्य को 'दासता की मानसिकता' से मुक्त करने का प्रयास करता है। यह मानव मूल्यों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

मानवीय गरिमा और दलित जीवन

मानवीय गरिमा दलित साहित्य का सबसे गहरा नैतिक आग्रह है। छुआछूत, अपमान, बहिष्कार और सामाजिक हिंसा ने दलित जीवन को निरंतर अपमानित किया है। दलित साहित्य इन स्थितियों का वर्णन करते हुए यह मूल प्रश्न उठाता है— क्या मनुष्य की गरिमा उसकी जाति से निर्धारित हो सकती है?

सूरजपाल चौहान और अन्य दलित रचनाकारों की कृतियों में दलित जीवन की पीड़ा केवल सामाजिक यथार्थ नहीं, बल्कि गरिमा के हनन की कथा है। दलित साहित्य मनुष्य को वस्तु नहीं, बल्कि चेतन और सम्मानपूर्ण व्यक्ति के रूप में स्थापित करता है।

न्याय और प्रतिरोध की चेतना

दलित साहित्य केवल करुणा का साहित्य नहीं है, बल्कि प्रतिरोध का साहित्य है। यह अन्याय को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उसके विरुद्ध वैचारिक संघर्ष करता है। यह प्रतिरोध हिंसक नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक है। डॉ. अंबेडकर का "Educate, Agitate, Organize" का सिद्धांत दलित साहित्य की प्रेरणा बनता है। यहाँ मानव मूल्य केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के औजार हैं।

दलित स्त्री लेखन और मानव मूल्य

दलित स्त्री लेखन दलित साहित्य को नई गहराई प्रदान करता है। दलित स्त्री जाति और लिंग—दोनों स्तरों पर शोषण का सामना करती है। उर्मिला पवार, बबीता रानी और अन्य लेखिकाएँ दलित स्त्री के संघर्ष, आत्मसम्मान और चेतना को स्वर देती हैं। उनका लेखन यह सिद्ध करता है कि मानव मूल्य तब तक पूर्ण नहीं हो सकते, जब तक स्त्री की गरिमा और स्वतंत्रता सुनिश्चित न हो।

भाषा, शिल्प और अनुभव की प्रामाणिकता

दलित साहित्य की भाषा सजावटी नहीं, बल्कि जीवन की यथार्थ भूमि से उपजी हुई है। यह भाषा लोकतांत्रिक है और मानवीय संवेदना को जागृत करती है। यह साहित्य कल्पना से अधिक अनुभव को महत्व देता है। यही इसकी मौलिकता और नैतिक शक्ति है।

दलित साहित्य और लोकतांत्रिक मूल्य

दलित साहित्य लोकतंत्र को केवल राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि सामाजिक समानता का आधार मानता है। यह प्रश्न उठाता है कि क्या सामाजिक न्याय के बिना लोकतंत्र संभव है? दलित साहित्य लोकतंत्र को मानवीय बनाने का प्रयास करता है और मानव मूल्यों को उसकी आत्मा के रूप में स्थापित करता है।

वैश्विक संदर्भ और समकालीन प्रासंगिकता

आज दलित साहित्य केवल भारतीय संदर्भ तक सीमित नहीं है। यह वैश्विक मानवाधिकार विमर्श से जुड़ता है। नस्लभेद, वर्गभेद और लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध विश्व साहित्य में जो संघर्ष दिखाई देता है, दलित साहित्य उसका भारतीय स्वर है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दलित साहित्य केवल एक साहित्यिक धारा नहीं, बल्कि मानव मूल्यों का सशक्त घोषणापत्र है। यह समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और न्याय जैसे मूल्यों को जीवन-संघर्ष के माध्यम से स्थापित करता है। दलित साहित्य मनुष्य को उसकी मनुष्यता लौटाने का साहित्य है। यह हमें यह सिखाता है कि साहित्य का वास्तविक उद्देश्य केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि मानवता का निर्माण है। इस दृष्टि से दलित साहित्य हिंदी साहित्य की नैतिक चेतना का सबसे सशक्त स्वर बनकर उभरता है।

संदर्भ सूची

अंबेडकर, डॉ. भीमराव — जाति का विनाश
वाल्मीकि, ओमप्रकाश — जूठन
लिंबाले, शरणकुमार — दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
पवार, दया — बलूता
कंवल भारती — दलित विमर्श की भूमिका
उर्मिला पवार — हम भी इतिहास लिखेंगे
चौहान, सूरजपाल — चयनित रचनाएँ
हिंदी दलित साहित्य : आलोचनात्मक अध्ययन

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026